

## सौ लौड़ों से चुद चुकी हूँ मैं !!

भैं उन दिनों अपने चाचा जान के यहाँ वाराणसी आई हुई थी। उनके लड़का अब्दुल बड़ा ही खूबसूरत था। गोरा चिट्टा, दुबला सा, लम्बा सा, उसे देखते ही मेरा

दिल... [Continue Reading] ...

**Story By: (shamimbanokanpur)** 

Posted: Thursday, September 15th, 2005

Categories: रिश्तों में चुदाई

Online version: सौ लौड़ों से चुद चुकी हूँ मैं !!

## सौ लौड़ों से चुद चुकी हूँ मैं !!

मैं उन दिनों अपने चाचा जान के यहाँ वाराणसी आई हुई थी। उनके लड़का अब्दुल बड़ा ही खूबसूरत था। गोरा चिट्टा, दुबला सा, लम्बा सा, उसे देखते ही मेरा दिल उस पर आ गया था।

यूँ तो कानपुर में मुझे चोदने वाले कम नहीं थे, पर उनमें ज्यादातर तो गाण्ड मारने के शौकीन थे। गाण्ड मरवाने में मुझे अच्छा तो लगता था पर असल में तो चूत चुद जाये उसका तो कोई मुकाबला ही नहीं है ना।

अब्दुल को देख कर मुझे उससे चुदवाने की इच्छा बलवती होने लगी। अब्दुल भी मेरी हसीन जवानी पर फ़िदा तो था, पर रिश्ते में उसकी बहन जो लगती थी मैं!!!

उसे यह पता नहीं था कि कानपुर में तो कोई यह रिश्ता रखता ही नहीं था। उसे यह बात बताना जरूरी था वरना तो मुझे देख कर बस मुठ ही मार कर रह जायेगा। रात को मैं बिस्तर के अन्दर ही घुस कर उसके नाम की अंगुली चूत में घुसा कर पानी निकाल देती थी।

कहावत है ना, दिल को दिल से राहत होती है, यह बात हम में ज्यादा दिनों तक अन्दर नहीं रह पाई। एक दूसरे की नजरें आपस में लड़ती और दिल का फ़ूल खिल उठता था। नजरें आपस में आपस में सब कुछ कह जाती थी, पर दिल तड़प कर रह जाते थे।

मैं जान बूझ कर के कसी जीन्स और तंग और चिपका हुआ बनियान-नुमा टॉप सिर्फ़ उसके लिये ही पहनती थी, इसमें मेरे जिस्म की सारी गोलाईयाँ उभर कर सामने दिखने लग जाती थी। मेरी मस्त चूंचिया देख कर तो वो अपनी नजरें हटा ही नहीं पाता था। अब मैं

हिम्मत करके उसे देख कर मतलब से मुसकराया करती थी।

उस बेचारे को यह नहीं पता था कि मैं उसे सिर्फ़ अपनी वासना शान्त करने के लिये काम में लाना चाहती हूँ, एक नया जिस्म, एक नया मस्त कड़क लण्ड, नई जवानी, नया अनुभव, नया सुख, नई मस्ती... सभी को यही तो चाहिये ना।

एक दिन शाम को सभी घर वाले शादी के खाने पर गए हुए थे। मैंने सोचा- खाने का समय नौ बजे का होता है तो मैं देरी से चली जाऊंगी। पर वहाँ पर घर वालों का कार्यक्रम बदल गया, वो लोग जल्दी खाना खाने के बाद दूसरी शादी में भी हाजिरी देना चाह रहे थे। उन्होंने अब्दुल को मुझे लेने घर भेज दिया।

मैं उस समय अकेलेपन का फ़ायदा उठा कर कम्प्यूटर पर अन्तर्वासना पर कहानी पढ़ रही थी। किसी को आया देख कर मैंने कम्प्यूटर बन्द कर दिया और बाहर आ गई। अकेले अब्दुल को देख कर मैं चौंक गई। मन में सोचा कि शायद इसको मेरे अकेले होने का फ़ायदा उठाना है, इसलिये इसने मौका देख कर इधर आया है। मैं भी इस मौके को नहीं जाने देना चाह रही थी। मैं दिल ही दिल में इसके लिये मैं अपने आप को तैयार करने लगी।

मैं ढीला ढाला पुराना सा कुरता पहने थी और अच्छी भी नहीं लग रही थी, मुझे अपने आप पर बहुत खीज आई।

"अरे !ऐसे ही हो अब तक, तैयार तो हो लो, जल्दी चलना है।" उसने मेरे जिस्म को ऊपर से नाचे तक देखा।

"हां, अन्दर आ जाओ, अभी तैयार हो जाती हूँ !" मैं उसे मतलब से घूरने लगी।

"मैं कुछ मदद करूं क्या, कुछ लाना हो तो ?"

"बस दरवाजा बन्द कर दो... और कुछ नहीं !" उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया।

"बस, ठीक है ना... सुनो बानो, नाराज नहीं हो तो एक बात कहूं?" उसने हिम्मत दिखाई और मेरा दिल धक धक करने लगा।

"अरे कहो ना, भाई हो, शरमाते क्यूँ हो ?" भाई का शब्द सुनते ही उसका सारा जोश ठण्डा पड़ गया।

"नहीं बस यूँ ही, कुछ नहीं!" उसका प्यारा सा मुखड़ा लटक गया।

"अच्छा भाई नहीं दोस्त हो बस, अब कहो..."

"मैं चाहता हुँ कि बस एक बार ... बस एक बार ... मेरे गाल पर प्यार कर लो !"

"बस इतनी सी बात ...?"

मुझे लगा मौका है, बात आगे बढ़ा लो ...

मैं उसके पास गई, और उसके गाल पर एक गहरा सा चुम्मा ले लिया।

"थेंक्स... अच्छा लगा !"

"बस एक ही... एक दो बार और कर दूँ ..." मैंने एक किस गाल पर और दूसरा होंठ पर कर दिया। इतना उसे भड़काने के लिये बहुत था।

"मुझे भी करने दो ना सिर्फ़ एक बार !" मैंने अपनी आंखे बन्द कर दी और चेहरा ऊपर कर दिया।

उसने धीरे से मेरे निचले होंठ दबा कर चूस लिये और उसके हाथ मेरी कमर पर कस गए।

उसका लम्बा किस खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। मेरे मन की कली खिल उठी। मैंने सोचा कि ये तो गया काम से, चक्कर में आ ही गया। हो सकता है शायद वो यह सोच रहा हो कि उसने मैदान मार लिया।

"अब्दुल, बस कर न, कोई आ जायेगा....हाय अब्बा.... चल छोड़ दे अब!"

"बानो, बस थोड़ा सा और....!ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा ना, सब घर में रहते हैं और आप ऊपर मेरे कमरे में आती ही नहीं हैं!"

"हायऽऽ बसऽऽ मेरे अरमान जाग जायेंगे, अब्दुल, बस कर !" मैंने उसे और भड़काया।

मेरा मन खुशी के मारे उछल रहा था। उसे छोड़ने का दिल बिल्कुल ही नहीं कर रहा था। हम दोनों प्यार में एक दूसरे से लिपट पड़े। वो मेरे होंठो को बेतहाशा चूमने लग गया था, जैसे सब्र का बांध टूट गया हो। उसका जिस्म मेरे जिस्म से रगड़ खा कर उत्तेजित होने लगा था। जाने कब उसके हाथ मेरे उभरे अंगों तक पहुंच गए और उसे सहलाने और दबाने लगे।

ढीले कुरते का यह फ़ायदा हुआ कि उसके हाथ मेरी नंगी चूंचियों तक सरलता से पहुंच गये और अब मुझे भरपूर मजा दे रहे थे। मेरी चूत गीली हो उठी।

"अब्दुल अब तक तू कहाँ था रे ? मुझसे दूर क्यों रहा था ? हाय तुझे पा कर मुझे कितना अच्छा लग रहा है ! कब से तो मैं तुझे लाईन मार रही थी !" मैंने अपनी दिल की बात उससे कह दी।

"मैं भी कबसे आपको प्यार करता हूँ... मैंने भी तो कितनी बार आपको देखा, पर हिम्मत नहीं होती थी ... बानो सच तुम मेरी हो, मुझे यकीन ही नहीं हो रहा है !" "हाय अब्दुल, सच में मुझे प्यार करोगे... करो ना... मेरे दिल की हसरत निकाल दो, प्लीज !" मुझे लग रहा था कि शादी वादी की ऐसी की तैसी, अभी टांगे चौड़ी करके उसका लण्ड घुसा लूँ।

"देर हो जायेगी बानो, रात को आ जाना ऊपर मेरे कमरे में... मुझे भी अपनी दिल की हसरतें पूरी करनी हैं !"

"मेरे अब्दुल...!" और एक बार फिर से हम लिपट कर चुम्मा चाटी करने लगे।

उसके लण्ड का भी बुरा हाल था और मेरी चूत तो पानी टपकाने लगी थी। प्यार और वासना की एक मिली जुली आग लगी हुई थी, जिस्म मीठी आग में झुलसने लगा था। लग रहा था कि अभी चुदवा कर सारा पानी निकाल दूँ पर मेरे रब्बा ....हाय.... अभी इस आग में मुझे थोड़ी देर और जलना था।

रात को लगभग घर लौटते लौटते साढ़े ग्यारह बज रहे थे। मेरा मन सब जगह खाली खाली सा लग रहा था, बस अब्दुल ही नजर आ रहा था। इंतजार खत्म हुआ। हम सभी कपड़े बदल कर सोने की तैयारी करने लगे ...

और मैं ....

जी हाँ, चुदने की तैयारी कर रही थी। चूत में और गाण्ड में चिकनाई लगा कर मल रही थी। चूंचियो में भी क्रीम लगा कर उसे खुशबूदार और चमकदार बना लिया था। बस एक हल्का सा नाईट गाऊन ऊपर से यूँ ही लटका लिया और समय का इन्तजार करती रही।

साढ़े बारह बजे तक जब मुझे यकीन हो गया कि अपने अपने कमरों में सब सो गये होंगे। तब मैं दबे पांव बैठक में से निकल पड़ी। पास के कमरे में सिसकारियों की आवाज से लगा कि भाभी और भैया का चुदाई का कार्यक्रम चल रहा था। आज सब औरते फ़्रेश थी, घर के काम से छुट्टी थी, सारी ताकत को चुदाई में लगा रही थी।

मैं बरामदे की सीढ़ियों से ऊपर आ गई। अब्दुल के कमरे की लाईट जली हुई थी। मैंने दरवाजा खोला तो अब्दुल तौलिया लपेटे खड़ा था। शायद अभी नहाया था, साबुन की खुशबू से मैंने अन्दाजा लगाया। मुझे ये अच्छा लगा, कि अब मैं उसके साफ़ सुथरे शरीर का पूरा आनद ले पाउंगी।

"बानो, तेरा तो अन्दर का सब कुछ दिख रहा है, बड़ी मस्त लग रही है तू !"

"तू भी तो मस्त लग रहा है, ये सिर्फ़ तौलिया ही है ना या अन्दर और भी है कुछ ?" मैंने उसका तौलिया खींच लिया।

वो नंगा हो गया। उसका कड़क लण्ड सीधा खड़ा था। मेरा मन डोल उठा चुदने के लिये।

"चल आ मस्ती करें ! शावर के नीचे पानी में चलें, गीली गीली में करने से मजा आयेगा !"

मैंने देखा उसकी सांसे उखड़ने लगी थी। उसकी धड़कनें बढ़ गई थी। मैंने उसका हाथ पकड़ा और जा कर शावर के नीचे खड़ी हो गई। मैंने उसका लण्ड पकड़ा और नीचे बैठ गई। उसके लौड़े को हाथ से सहलाने लगी। उसकी सुपाड़े की स्किन फ़टी हुई थी, मतलब वो पूरा मर्द था, किसी को चोद चुका था।

"किसी के साथ किया था... बता ना !" मैंने लण्ड मुँह में लेते हुए कहा।

"नहीं अभी तक तो नहीं ... पर ये क्या कर रही हो, हटो !" उसने अपना लण्ड मेरे मुँह से बाहर निकाल लिया। शायद उसे ये अच्छा नहीं लगा।

"क्यूँ क्या हुआ....मजा नहीं आ रहा है क्या ?"

"बस ये नहीं करो…" मुझे बाहों से पकड़ कर उठा लिया, और हम पानी की बौछार में फिर से लिपट पड़े।

"अच्छा पर तुमने कुछ तो किया है ना, अन्दर तो घुसाया ही है तुमने?"

"बानो, तुमने तो पकड़ लिया मुझे !पर सच में !वो यूसुफ़ है ना वो बड़ा खराब है !"

"अच्छा, क्या गाण्ड मरवाई थी उसने ?" मैंने उसे और खोलने की कोशिश की।

"चुप बानो, ऐसे क्या बोलती है।" उसने मुझे ऐसे कहने से मना किया।

"बोल ना, गाण्ड मारी थी उसकी ... ?" मुझे तो मजा लेना था।

"हाँ, कोशिश की थी, पर जोर से लग गई थी यहाँ पर !बहुत तकलीफ़ हुई थी !"

"तो फिर क्या उसने तेरी गाण्ड चोदी थी ?"

"अब तुमने गाली बोली तो ठीक नहीं होगा !" उसने मुझे आगाह किया। पर मैं तो वासना में बह निकली थी। मुझे चुदाई की ऐसी बातें ही चाहिये थी।

"बता ना !तुने गाण्ड मराई थी ना ?" मैंने फिर जिद की।

"हाँ, उसने मेरी गाण्ड मार दी थी, बहुत दर्द हुआ था !" उसने शिकायत भरे लहजे में कहा।

"मुझे गीली करके चूत मारेगा या गाण्ड मारेगा ?" मेरी चूत लपलपा उठी, चिकना पानी भर गया चूत में।

मेरी बातों को सुनकर वो नाराज हो गया और वहां से कमरे में आ गया और बिस्तर पर लेट गया। "बानो क्या हो गया है तुम्हें ? ऐसी गालियाँ क्यूँ निकाल रही हो ?" उसने फिर से शिकायत की।

पर मुझे अपना मजा लेना था।

मैं उसके पास आ गई और अपनी एक टांग ऊपर उठा कर उसके गले के पास रख दी और अपनी भीगी हुई चूत को उसके मुँह से लगा दिया। मेरी चिकनी चूत का पानी उसके मुँह के आस पास लग कर फ़ैल गया। वो कुलबुला उठा।

"अब्दुल, चल चूस ले, मुझे मस्त कर दे भेन-चोद, ये दाना हौले से मसल डाल !" मैं अपनी असलियत पर आती जा रही थी।

"चल हट ना, तू तो बेशरम हो गई है !"

"भोसड़ी के !गाण्ड मरवा सकता है, चूत से परहेज कर रहा है ? चूतिया है तू तो !"

मैंने उसके दुबले शरीर को कस कर भींच लिया। और उस पर चढ़ गई। उसका लौड़ा तो पहले से ही तन्ना रहा था। उसे अपनी चूत में दबा लिया और देखते ही देखते वो चूत में घुस गया।

"हरामी साले !बड़े नखरे दिख रहा है रे !एक लौड़ा क्या मिल गया तेरे को !तो क्या खुदा हो गया है रे ?मादरचोद !तेरे जैसे सौ लौड़ों से चुद चुकी हूँ मैं !!" मैं उत्तेजना में बह चली।

मै ऊपर को धक्के लगाने लगी।

"अरे छोड़ दे रण्डी, छिनाल मुझे !तेरी भेन चोदूँ !साली हरामी, हट जा !"

"लगा ले जोर, तुझे आज मैं नहीं छोड़ने वाली, साला बड़ा आया था आशिकी झाड़ने।" मैंने उसे और कस कर जकड़ लिया। उसने भी अपनी ताकत लगा दी। जैसे जैसे वो ताकत लगाता, उसका लण्ड भी जोर मारता।

मुझे बड़ा मजा आ रहा था। मेरे में जाने कहा से इतनी ताकत आ गई कि उसे मैंने बुरी तरह से दबा लिया। वो कराह उठा। मेरी चूत तेजी से भड़क उठी, और कस कस के उसके लौड़े पर चूत पटकने लगी। मेरे मुँह से सिसकारियाँ निकलने लगी।

अचानक मेरा पानी निकल पड़ा और मैं झड़ने लगी। मैंने उसे और जोर से नीचे भींच लिया।

"बानो मेरी सांस रुक रही है, छोड़ दे प्लीज !" मुझे अचानक लगा कि अरे मैंने ये क्या कर दिया। अब्दुल का तो जैसे जबरन चोदन कर ही कर दिया। मैंने उसका कड़क लण्ड बाहर निकाला और उस पर से हट गई।

अब्दुल थका सा उठा, पर उठते मुझ पर झपट पड़ा और मुझे बिस्तर पर उल्टा पटक दिया।

"तेरी मां का भोसड़ा, अब बताता हू मैं...." उसने मुझे गाली देते हुये मेरी गाण्ड में अपना लण्ड घुसेड़ दिया। पर उसे क्या पता था कि मैं तो पूरी तैयारी से आई थी। लण्ड गाण्ड में घुसते ही मुझे मजा आ गया।

"हाय रे.... मेरी गाण्ड बजायेगा ना, देख धीरे बजाना, लग जायेगी मुझे!"

"हरामी तेरी माँ चुद जायेगी अब, तेरी गाण्ड फ़ाड़ कर रख दूंगा.... साली चुद्दक्कड़ .... मेरी माँ चोद दी तूने.... तेरी तो फ़ोड़ कर रख दूंगा !" गुस्से में वो कस के गाण्ड चोद रहा था। मुझे मस्त किये दे रहा था। मुझे इसी तरह की चुदाई चाहिए थी। मुझे ऐसी ही तूफ़ानी तरीके से चुदना अच्छा लगता था। हां मेरे चूंचे जरूर उसने रगड़ कर रख दिये थे जो टीस रहे थे। पर उसमें भी मजा था। वो मेरे चूंचे अभी भी बुरी तरह से खींचे जा रहा था। बहुत दर्द होने लगा था। गाण्ड में भी आस पास दुखने लगा था। मेरे गालों पर उसने काट लिया था। मेरे चूचुकों को दांतो से कुचल दिया था।

और अब वो अंतिम चरण में था। कुछ ही देर में उसके लण्ड ने फ़ुफ़कार भरी और पिचकारी छोड़ दी, ढेर सारा वीर्य निकल पड़ा और मेरे चूतड़ो पर फ़ैल गया। वो बार बार जोर मार कर लौड़े से अपना वीर्य बाहर फ़ेंक रहा था। कुछ ही पलो में वो पूरा झड़ गया।

मैं तुरन्त उसे धक्का दे कर अलग हो गई और खड़ी हो गई।

"मजा आया मेरे अब्दुल?"

"आप बहुत खराब हैं बानो, तुम भी युसुफ़ की तरह ही निकली.... देख मेरा लौड़ा, अब दर्द कर रहा है।"

"तू तो साला न तो लण्ड पीने दे और ना ही चूत का रस पीए, तो फिर जबरदस्ती करनी ही पड़ती है ना !कोई एक और साथ में होती तो तेरे से जबरदस्ती अपनी रसीली चूत चुसवाती।"

"हाँ और ये लण्ड में दर्द जो हो रहा है, साली ऊपर से मुझे पूरा चोद दिया।" उसने अपना लौड़ा मुझे दिखाया। उसकी शिकायत पर मैं हंस पड़ी।

"दर्द तो तूने मेरी गाण्ड फोड़ी है ना उसका है, मेरी चूत तो देख अब तक रस से भरी खान है, लग ही नहीं सकती है तुझे।"

"तू अब जा बानो, मेरी तो तूने आज ऐसी तैसी कर दी!"

"और ये देख तूने तो मेरे चूचे लाल कर दिये, देख दोनों सूज के दुगने मोटे हो गए हैं, मर साले ... सुन अब्दुल, कल फ़िर ऐसे ही एक दूसरे को बजायेंगे !" कह कर मैं हंसी और धीर से दरवाजा खोल कर दबे पांव नीचे अपने कमरे में आ गई।

मैंने जल्दी से अन्दर पेंटी पहनी और ब्रा डाल ली और बिस्तर में घुस गई। सब कुछ याद करके मुझे हंसी आ रही थी और खुशी भी हो रही थी अब्दुल को चोद कर, आज चुदाई करके मुझे मजा आ गया था, ऐसा जबरदस्ती वाला सुख मुझे जाने फिर कब मिलेगा।

मेरे चेहरे पर सुकून और शान्ति थी, चेहरे पर मुस्कान थी, दिल राजी था कि आज अब्दुल से चुदवा लिया, उसे फ़ड़फ़ड़ाता देख कर मजा भी आया था, पर हरामी ने मेरे चूंचो पर उसकी कसर निकाल दी थी...

धन्यवाद!